वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जनवरी - 2026

- परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 175वां जन्म महोत्सव
- महोत्सव की विशेष सभा का सार
- देव जीवन की परम सुन्दरता
- देव समाज के पाठ और विचार के साधनों की तालिका(वर्ष 2026 ई०)

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 175वां पावन महोत्सव-2025

हे हमारे सब के परम उपकारी, परम हितकारी, हमें मिथ्या और पाप से निकालने वाले, हमारे आत्मिक रक्षक महा अद्वितीय आर्विभाव परम पूजनीय भगवन!

आपके पवित्र श्री चरणों में बार-2 प्रणाम और गहरे धन्यवाद का प्रकाश करती हूं।

आपका महा पवित्र 175वां शुभ जन्म दिन हमारी तुच्छ योग्यताओं के अनुसार हम सबके लिए बहुत हितकर प्रमाणित हुआ है। मेरे लिखने तक इस महान पर्व की समाप्ति को तीन दिन हो गए हैं, परन्तु मेरी आंखों के सामने यह एक स्वप्न की तरह अनुभव हो रहा है। आपके आशीर्वाद, सहायकारी शक्तियों, धर्म सम्बन्धियों और यहां के निवासियों की सहायता से हमारे बेसरोसामान की हालत में भी हम यह पर्व अच्छी शानोशौकत से मनाने के योग्य हुए हैं। उन सबकी तहदिल से धन्यवादी हूं।

प्रतिकूल परिस्थितियां एक ओर हमारी परीक्षा लेने के लिए खड़ी थीं, कहीं इसकी सफलता को रोकने के लिए विनाशकारी शक्तियां अपना जोर लगा रही थीं, वहां पैर पैर पर हमारी सहायता होना, जहां भी कोई दिक्कत आ रही थी, वहां ही उस समस्या का समाधान हमारे सामने आ जाना, हैरान कर रहा था। यह विश्वास इतना दृढ़ हुआ है कि यदि लक्ष्य विकासकारी हो, तो दुनियां भर का विरोध शान्त हो जाता है। पूजनीय भगवान की इतनी विरोधताओं के बावजूद फतह होना हमारे हौसले को बढ़ाता रहा है।

महोत्सव का एक एक दृश्य इतना सुन्दर था, हाल की सुन्दरता, लाईटों से व झण्डों से सजावट, हाल की भव्यता, सेहन में पौधों पर लाईट की जगमगाहट आने वाले यात्रियों के लिए स्वागत के लिए तैयार थी। हे मेरे परम उपकारी सतगुरू! यह सब कैसे सम्भव हुआ, कैसे चाव भाव से यह महोत्सव मनाया गया, धर्म सम्बन्धियों में कैसे इतना उत्साह था, यह सब सहायकारी शक्तियों की छत्रछाया के बिना सम्भव नहीं था। आप को जितना भी धन्यवाद दूं कम है।

आपकी महा उपकृत
- सुरजीत बराड़

"बदल जाए अगर माली, चमन होता नहीं खाली,
बहारें फिर भी आती हैं, बहारें फिर भी आएंगी"

DEV SAMAJ GLOBAL
TID: 63989633

Scan & Pay

आवश्यक सूचना

Dev Samaj Globbal

Bank Name	:	**HDFC**
Account No.	:	**99999146553154**
Micro Code	:	**148240005**
iFSC Code	:	**HDFC0002318**

नोट : सभी धर्म सम्बन्धियों एवं अन्य श्रद्धालु जनों से निवेदन है कि किसी भी प्रकार की भेंट-चंदा आदि इस बैंक अकाउंट में भेज सकते हैं।

धर्म जीवन

खण्ड 37 अंक 1
जनवरी - 2026
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 175वां जन्म महोत्सव

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 175वां पावन शुभ जन्म महोत्सव बड़ी धूमधाम और हर्षो उल्लास से इंदिरा होलीडे होम सैक्टर 24 चण्डीगढ़ में मनाया गया। महोत्सव 03 दिसम्बर से 06 दिसम्बर 2025 तक मनाया गया। महोत्सव मनाने के लिए उपरोक्त स्थान पहले से ही बुक कर लिया गया था। यात्रियों के ठहरने, खाने और सभा स्थान के लिए श्रद्धेय श्रीमान बलदेव सिंह जी के सुपुत्र डा० देव अनुरूप जी ने लाखों रुपए खर्च करके महोत्सव के लिए इसका प्रबन्ध किया। ताकि सब लोग बहुत सुविधापूर्वक ठहर सकें। सब कमरों के साथ बाथरूम अटैच थे और सारा होम इस प्रकार बरामदों से कवर था कि बारिश आदि का भी डर नहीं था। बहुत हरा भरा खुला आंगन था, जिसमें दिन के समय यात्रीगण कुर्सियों पर बैठकर धूप का आनन्द लेते रहे। दो बड़े हाल थे। एक हाल कान्फ्रैंस रूम की तरह प्रयोग होता है, जिसमें बहुत बड़ी स्टेज बनी हुई है और 120 - 130 आदमियों के बैठने की स्पेस है।

2 तारीख को ही हमें हाल मिल गया था। इसलिए दो तारीख को हाल की सजावट आदि शुरू कर दी थी। इसमें गोपाल जी, जसविन्द्र भुल्लर जी व सुरेंदर भुल्लर जी ने मुख्य रूप से काम किया। अगले दिन फ्रैश फूलों आदि की सजावट की गई, उस दिन डॉक्टर नम्रता बराड़ ने भी उनका पूरा सहयोग दिया। 2 बजे तक पूरा हाल सज गया। बाहर पौधों में लाईटस व बहुत सारे झंडे लगाए गए, सड़क पर बाहर की तरफ भी झंडे लगाए गए। इस प्रकार सारा होम सज कर बहुत आकर्षित कर रहा था। खाने का हाल बहुत बड़ा था, उसमें भी टेबल आदि लगाकर उसे तैयार किया गया। 2 तारीख को राधेश्याम जी और उनकी धर्म पत्नी आ गए थे। 3 दिसम्बर को उन्होंने भी सजावट और सफाई में पूरा सहयोग दिया। 3 तारीख को 12 बजे ही यात्री आने शुरू हो गए। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने श्री जसविन्द्र जी के साथ राजस्थान, थराजवाला, कल्याण आदि स्थानों का प्रचार दौरा महोत्सव से पहले किया। मल्लेकां में भी सभाएं करवाई गई थीं। महोत्सव पर ठहराने का प्रबंध श्रीमति डा० सतिन्दर ढिल्लों जी ने किया। सजावट, बैंड आदि समेत सारे प्रबंध श्रीमती सुरजीत बराड़ जी ने श्रीमान गोपाल जी, शम्भू जी और भिन्दर जी आदि की सहायता से किया।

खाना खिलाने का प्रबंध श्री सरताज सिंह जी और पार्टी ने किया। श्रीमान सरताज जी के स्कूल के बच्चे इस महोत्सव पर शामिल हुए जिन्होंने कितने ही सुन्दर भजनों का गान किया और महोत्सव की रौनक बढ़ाई। पुस्तकों की स्टाल और दान आदि लेने का काम श्रीमान गौतम जी ने किया। स्त्रियों की सभा डा० सतिन्द्र ढिल्लों जी ने करवाई और बच्चों की नीति शिक्षा की सभा श्रीमती प्रीतम कौर जी ने करवाई। हर रोज रात को आठ बजे धर्म संबंधी मिलकर भजनों का गान करते थे कि जिससे बहुत सुन्दर वातावरण बनता था। इस पावन महोत्सव पर मल्लेकां, केसूपुरा, गंगानगर, गजसिंहपुर, पदमपुर, दिल्ली, नोयडा, भठिंडा, गोनियाना, पटियाला, कल्याण, चंडीगढ़, पंचकूला, देहरादून, फरीदाबाद, गुडगांव आदि स्थानों से धर्म संबंधी और यात्री पधारे।

सभाएं श्रीमान राधेश्याम जी, माननीय श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, मिसिज़ सुरजीत बराड़ जी ने करवाई, लैक्चर सरताज सिंह जी M.A., B.Ed और गौतम जी M.Sc., B.Ed ने दिए। जितनी मेहनत से और अध्ययन आदि के द्वारा इस सारे प्रोग्राम का संचालन हुआ, उसके प्रभाव श्रोतागण पर दिखाई दिए। बच्चों की भजनों की सभा के लिए सरताज जी और उनकी धर्मपत्नी दविन्द्र जी ने अपने म्यूजिक टीचर के साथ बहुत मेहनत से तैयारी की थी। जीवन कथाएं सुनाकर बच्चों ने सबका दिल जीत लिया। सारा प्रोग्राम जिस सफलता से पूरा हुआ उसके लिए सबका धन्यवाद किया गया। 4 दिसम्बर को पूजनीय देव शास्त्र के पहले भाग में से चौथे अध्याय तक) Quiz किया गया जो ज्ञानवर्धक होने के साथ साथ उपस्थित जनों के लिए बहुत दिलचस्पी का प्रोग्राम था। एक और सुन्दर नज़ारा पैदा हुआ कि दो नई पुस्तकें "दिल के उद्गार" भाग-3 और "सफल और सार्थक जीवन की राह" छपवाई गई। पहली पुस्तक श्रद्धेय श्रीमान बलदेव सिंह जी के लेखों का संग्रह है और दूसरी पुस्तक श्रद्धेय श्रीमान पी.वी.कनल जी के लेखों का संग्रह है। इनका विमोचन परम पूजनीय भगवान देवात्मा की पड़पोतियों विजय लक्ष्मी जी और विकास जी के द्वारा करवाया गया, जिसका सब धर्म सम्बन्धियों के दिल पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। हमारा सौभाग्य है कि गुरू महाराज के किसी अंश से रूबरू होने का हमें अवसर मिला। चाहे वह अपने पड़दादा जी को उस प्रकार नहीं समझ सके, परन्तु उनका अंश होने के नाते हमारे सम्मान के अधिकारी हैं। श्रद्धेय श्रीमान बलदेव सिंह जी सारी उम्र गुरू महाराज के परिवार को विशेष सम्मान व उपहार देते रहे हैं। श्रद्धेय पंडित हरनारायण जी अग्निहोत्री के सुपुत्र श्रीमान सुबोध कुमार जी, श्रीमान विजय कुमार जी अग्निहोत्री और उनके बेटे बेटियां सब हमारे पास आते रहे हैं और श्रीमान जी सदा उनको बहुत सम्मान देते रहे हैं, मौके-मौके पर उपहार भी देते रहे हैं।

दिनांक 03 दिसम्बर, 2025, शाम 4.30 बजे, प्रवेश सभा। विषय : निराली शक्तियां लेकर मेरे भगवान आए हैं। सभापति : श्रीमान राधेश्याम जी। "हमारे पूजनीय सतगुरू जी तुम हो धन्य....." नामक भजन से इस पावन जन्म महोत्सव की शुरूआत हुई। फिर देव स्तोत्र का गान और व्याख्या सभापति जी ने की। इसके पश्चात श्री

सभापति जी ने भगवान देवात्मा के देव दरबार में सहाय प्रार्थना की। फिर गुरूदेव राज जी ने एक भजन "तुम्हारे दर से हे सतगुरू धर्म का दान मिल जावे" का गान किया। भजन के बाद सभापति जी ने फरमाया कि अपने बारे में ज्ञान लाभ करना हर जगह बताया जाता है। हमारे अस्तित्व में आत्मा और शरीर है। आत्मा के विषय में बाहर की दुनियां में और धर्मों में मिथ्या का प्रचार होता है। मनुष्य कहां से आया है, क्या करने आया है और मरने के बाद कहां जाता है, इन सब प्रश्नों के वैज्ञानिक उत्तर धर्म नहीं देते। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने इनकी वैज्ञानिक व्याख्या दी है। मनुष्य को कौन चलाता है? भगवान देवात्मा बताते हैं कि मनुष्य को उसके भाव चलाते हैं। भौतिक, वनस्पति, पशु और मनुष्य जगत सब में परिवर्तन हो रहा है। आत्मा में भी परिवर्तन आता है, यह सत्य शिक्षा परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने दी है। भगवान देवात्मा निराली शक्तियां लेकर आए हैं इसलिए निराले धर्म की शिक्षा देते हैं। नेचर में परिवर्तन होता है। आत्मा के संबंध में मिथ्या को दूर करके सत्य शिक्षा केवल परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने दी है। मनुष्य ने भौतिक, वनस्पति और पशु जगत का विकास किया है परन्तु वह सुख अनुरागी प्रकृति के कारण हानिकारक भी बना हुआ है। सब जगतों के सर्वांग हित के निमित्त नेचर ने भगवान देवात्मा को प्रकट किया है, जो देवात्मा निराली देव शक्तियां लेकर पैदा हुए हैं। सभापति जी ने भगवान देवात्मा के बचपन में गिलहरी की घटना का वर्णन किया। सभा में उन्होंने खड़े होकर महोत्सव पर पधारे सभी यात्रीयों का स्वागत किया। श्रीमान गुरदेव राज जी ने यात्रियों के स्वागत में "सेवको और श्रद्धावानों गुरू के प्यारो स्वागतम्" भजन का गान किया। श्रीमान गौतम जी ने ड्यूटियों और सूचनाओं को बताया। इसके बाद भगवान देवात्मा के वंशीय जनों और अन्य धर्म सम्बन्धियों ने नई छपी पुस्तकों का विमोचन किया। देव समाज (G) की ओर से निम्नलिखित दो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं :-

(1) मेरे दिल के उद्‌गार, भाग-3 (श्रीमान बलदेव सिंह जी)

(2) सफल और सार्थक जीवन की राह (P.V. कनल जी)

शाम 8.00 बजे संगीत सभा :- सरताज जी के स्कूल के बच्चों और धर्म संबंधियों ने मिलकर कई भजनों का गान किया।

दिनांक 04 दिसम्बर, 2025, पहली सभा, सुबह : 9.00 बजे, सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, विषय : परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक सम्बन्ध। महिमा विषयक भजन श्रीमती रीटा जी ने गाया। देव स्तोत्र का गान और व्याख्या सभापति जी ने की। फिर बच्चों ने 'परम आवश्यक जीवनदायक मेरे भगवन का संबंध' भजन का गान किया। भजन के बाद श्री सभापति जी ने भगवान देवात्मा के देव दरबार में सहाय प्रार्थना की। फिर सभापति जी ने फरमाया कि देवधर्म प्रचलित धर्मों से बिल्कुल भिन्न है। आत्मा को बाकी धर्म निर्लेप और अमर कहते हैं। ईश्वर को भी कहते है कि यह बदलता नहीं है। देव धर्म ईश्वर को नहीं मानता और बताता है कि आत्मा नित्य बदलती है। नेचर सदा परिवर्तित

होती है। आत्मा भी नेचर का अंग है इसलिए सदा बदलती रहती है। आत्मा के संबंध में सत्यज्ञान लाभ करने के लिए देवात्मा का सबंध परम आवश्यक है। भगवान देवात्मा का संबंध सब अंगों में हित सन्पादक है। देवात्मा के संबंध से उनके शारीरिक, मानसिक, नैतिक और अध्यात्मिक पक्ष में विकास होता है। देव प्रभावों के द्वारा नेचर में मनुष्य का विकास हुआ है, देवात्मा सतगुरू नेचर में मनुष्य का आध्यात्मिक विकास करते हैं। सभापति जी ने प्रश्न किया कि हमें कौन चलाता है और उपस्थित जनों ने बताया कि हमें हमारे भाव चलाते हैं। मनुष्य का लक्ष्य क्या है, मनुष्य का लक्ष्य नीच जीवन से मोक्ष और उच्च जीवन में विकास है। सभापति जी ने बताया कि नीच जीवन से मोक्ष और उच्च जीवन में विकास भगवान देवात्मा के परम आवश्यक जीवनदायक संबंध से होता है और मनुष्य का यही सत्य लक्ष्य देवात्मा और सिर्फ देवात्मा पूरा करते हैं और कर सकते हैं। हमारे विश्व में बहुत सारे संबंध है। माता - पिता, भाई - बहन, पति - पत्नी आदि मनुष्य इन संबंधों में नीच गतियां करता है। देवात्मा का मूल संबंध मनुष्य को इन नीच गतियों से मोक्ष देता है और विकासकारी गतियां करने की प्रेरणा और बल प्रदान करता है। सभापति जी ने श्रीमान गुरबख्श सिंह जी के जीवन की घटनाएं बताई। सभापति जी ने बताया कि देवात्मा का संबंध परम आवश्यक, परम हितकर और जीवनदायक है। काश! हम ऐसे सतगुरु को दिल से सबसे अधिक प्यार कर सकें।

दूसरी सभा : Quiz (देवशास्त्र खण्ड पहला अध्याय से चार तक) दोपहर 2.00 बजे। इस Quiz में निम्नलिखित जनों ने भाग लिया :-

Team A	(1) श्रीमान गोपाल कृष्ण जी
	(2) श्रीमती रीटा जी
	(3) श्रीमान हेमंत जी
Team B	(1) श्रीमान सुखदेव जोसन जी
	(2) श्रीमान सुन्दर लाल जी
Team C	(1) श्रीमान जंगीर सिंह जी
	(2) श्रीमती दविन्द्र कौर जी
	(3) श्रीमती वीरपाल कौर जी
Team D	(1) श्रीमान गुरदेव राज जी
	(2) श्रीमान जसविन्द्र सिंह जी
	(3) श्रीमान विकास हंस जी

श्रीमान सरताज सिंह जी ने सभी का परिचय करवाया, डॉक्टर नम्रता बराड़ जी ने Score नोट किया, डॉ० शुभ रत्न जी ने Timer की भूमिका निभाई और श्रीमान गौतम जी ने प्रश्न उत्तर पूछे। श्रीमान गौतम जी ने प्रश्न पूछने के साथ - 2 हितकर जानकारी भी दी। सभी प्रतिभागियों ने प्रश्नों के सुन्दर उत्तर दिए। यह Quiz बहुत हितकर और ज्ञान से भरपूर था।

इस सभा से पहले 1.00 बजे बच्चों की नीति शिक्षा की सभा हुई। यह सभा श्रीमती प्रीतम कौर जी ने करवाई। बच्चों को हितकर ज्ञान और अच्छे संस्कारों के विषय में बताया गया।

पब्लिक लैक्चर, शाम 4.00 बजे, सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, वक्ता : श्रीमान सरताज सिंह जी, विषय : भगवान देवात्मा का अद्वितीय जीवन। सबसे पहले सभापति जी ने वक्ता का परिचय करवाया। बच्चों ने एक भजन "तेरे असरों से बाहर

अगर जाएंगे" का गान किया। वक्ता ने भगवान देवात्मा की देव वाणी से अपने लैक्चर की शुरूआत की। "हे मनुष्य तू केवल शरीर नहीं आत्मा भी है केवल शारीरिक सुखों में जीवन बर्बाद मत कर।" वक्ता ने बताया कि भगवान देवात्मा के वंशीय पूर्वज कान्यकुन्ज ब्राह्मण कुल से संबंधित थे। भगवान देवात्मा का जन्म 20 दिसम्बर 1850 को सूर्य उदय के समय श्री अकबरपुर में हुआ। भगवान देवात्मा के बचपन की घटनाएं बताई कि कैसे भगवान देवात्मा ने अपने भाई की पढ़ाई और बीमारी में सेवा की, कैसे उन्होंने उनके बच्चों की सेवा की, वक्ता ने भगवान देवात्मा की अपने गुरू के साथ संबंध जुड़ने की घटना बताई। उनकी अद्वितीय जीवन यात्रा पर रोशनी डाली। आपने भगवान देवात्मा की जीवन की कई घटनाएं बताईं। सभापति जी ने वक्ता का धन्यवाद किया।

शाम 8.00 बजे, संगीत सभा :- इस सभा में धर्म संबंधियों ने भगवान देवात्मा की महिमा के भजन गाए। इस सभा में वातावरण बहुत हितकर बन रहा था। भजन श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, श्रीमान गौतम जी, श्रीमान गुरदेवराज जी, श्रीमान गोपाल जी, श्रीमती रीटा जी, श्रीमती अंजू जी शर्मा, श्रीमान सुखदेव जोसन जी आदि धर्म संबंधियों ने गाए।

05 दिसम्बर 2025, महोत्सव का विशेष दिन :- सुबह 6.00 बजे धर्म संबंधी नहा धोकर महोत्सव हाल में इकट्ठे होने शुरू हो गए। भगवान देवात्मा की महिमा का गीत खूब जोश और श्रद्धा से गा रहे थे। श्रीमान गुरदेव राज जी अपनी पार्टी के साथ और स्त्रियां भी अपनी पार्टी सहित भजन गा रही थीं। भजन के बाद धर्म संबंधी जय ध्वनि कर रहे थे। ठीक सुबह 7.13 पर सूर्य उदय के समय घंटा बजते ही जय ध्वनि होने लगी, बैंड बजने लगा। इससे पहले बच्चों ने 'साडा देव उत्सव है आया सानूं खुशियां चढ़ियां जी' भजन का गान किया। सूर्य उदय के समय सबने 'प्रगटे देवगुरू भगवान जीवन ज्योति देने वाले' भजन का खूब जोश के साथ गान किया। फिर मंत्री देव समाज (G) श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने आज के दिन की सभी को बधाईयां दी, शुभ कामना की और भगवान के निराले आविर्भाव की खुशखबरी हाज़रीन को दी। जय ध्वनि के साथ ही बैंड बजने लगा। धर्म संबंधी अपने परम हितकर्ता के जन्मदिन की खुशी में बैंड की धुनों के साथ न केवल नौजवान बल्कि उमर रसीदा धर्म सम्बन्धी भी खूब नाचने लगे। यह नज़ारा देखने योग्य था। सभी लोगों ने फूल मालाओं से भगवान का अर्चन किया और उनका शुभ आर्शीवाद लिया।

विशेष सभा : 8.30 बजे सुबह, सभापति : श्रीमती सुरजीत बराड़ जी ने करवाई। विषय : भगवान देवात्मा का देव जीवन, उनका जीवन व्रत उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, त्याग और उत्पीड़न, सत्य धर्म की खोज और उसके अनोखे फल। इस मिशन के लिए हमारी जिम्मेवारी और धन जन की अपील (इस सभा का सार आगे दिया जाएगा।) सभा के बाद दान की अपील की गई। दानियों की लिस्ट अगले अंक में दी जाएगी। 1.30 बजे स्त्रियों की सभा हुई, जिसमें देव समाज के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में स्त्रियों के योगदान को बताया गया। माता पूजनीय श्रीमती लीलावती जी, पूजनीय श्रीमती

देवकी देवी जी, माननीय श्रीमती सरस्वति जी कनल के द्वारा जो गुरू मिशन का दान मांगने व प्रचार का काम हुआ, उसका वर्णन किया गया, इसका उपस्थित स्त्रियों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

शाम 3.00 बजे बच्चों की सभा :- इस सभा का संचालन माननीय श्रीमती सतिन्द्र ढिल्लों जी, श्रीमान सरताज सिंह जी, श्रीमती दविन्द्र कौर जी और श्रीमती प्रीतम कौर जी ने किया। देव समाजी परिवारों के बच्चों के अतिरिक्त सरताज जी के स्कूल के बच्चों ने भगवान देवात्मा की जीवन कथाएं सुनाईं और बहुत सुन्दर भजन का गान किया। बच्चों को इनाम बांटे गए। स्कूल के बच्चों ने लैक्चर से पहले शानदार भजन "निराली शक्तियां लेकर मेरे भगवान आए हैं" का गान किया।

पब्लिक लैक्चर शाम 4.00 बजे, सभापति : श्रीमान बलबहादुर जी, वक्ता : श्रीमान गौतम जी, विषय : देव जीवन की परम सुन्दरता। सबसे पहले गौतम जी ने "बचाना मरती रूहों को मिशन अपना बनाया है" वाला भजन गाया। फिर सभापति जी ने वक्ता का परिचय करवाया। (इस लैक्चर का सार भी आगे दिया गया है) रात 8.00 बजे धर्म संबंधियों ने भजनों का गान किया।

06 दिसम्बर 2025, सुबह 8.30 बजे। सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। विषय : सेवक सेविकाओं का ग्रहण, श्रेणियों में उन्नति। सबसे पहले रीटा जी ने महिमा विषयक भजन का गान किया। देव स्तोत्र के गान और व्याख्या के बाद सभापति जी ने सहाय प्रार्थना की। फिर सेवक बनने वाले जनों का परिचय श्री गोपाल जी और श्री बलदेव सिंह जी मल्लेकां ने करवाया। निम्नलिखित तीन जनों को भगवान देवात्मा की सेवकी और देव समाज की सभासदी में ग्रहण किया गया।

(1) श्रीमान सुरेश कुमार जी, दिल्ली
(2) श्रीमती ऊषा रानी जी, दिल्ली
(3) श्रीमान बहादुर राम जी, मल्लेकां

निम्नलिखित जनों को दूसरी श्रेणी में उन्नत किया गया :-

1. श्रीमान गौतम जी 2. श्रीमान गोपाल जी
3. श्रीमती रीटा जी 4. श्रीमान सुखदेव जोसन जी
5. श्रीमान जंगीर सिंह जी 6. श्रीमान सुन्दर लाल जी
7. श्रीमान गुरदेव राज जी 8. श्रीमान सरताज सिंह जी
9. श्रीमान जोगिन्दर सिंह पम्मा जी 10. श्रीमती दविन्द्र कौर जी
11. श्रीमान जसविन्द्र सिंह जी

इसके बाद श्रीमान राधेश्याम जी ने सभी सभाओं की संक्षिप्त व्याख्या की और उपस्थित जनों को भाव प्रकाश करने के लिए आमंत्रित किया।

भाव प्रकाश

1) **श्रीमान गुरदेव राज जी :-** भगवान का जन्म महोत्सव हमने खूब चाव से मनाया है। उसके संबंध में हमारी बहुत जिम्मेवारियां है। बड़ों ने जो आज हमारी उन्नति की है मुझे दूसरी श्रेणी में किया है। मैं समझता हूँ कि मैं इस लायक नहीं हूँ। लेकिन मुझ पर कृपा की है, मेरा उत्साह बहुत बड़ा है। मैं online सभाओं में बढ़ चढ़ कर लाभ उठाया करूंगा और उसमें भाग लूंगा।

2) **श्रीमान बलदेव सिंह जी, मल्लेकां** मुझे इस महोत्सव पर बहुत खुशी हुई है। मेरा

सारा परिवार आया है जिसकी मुझे खुशी है। अगर मेरा परिवार, मेरे भाई साहिब देव समाज से जुड जावें तो मुझे और भी खुशी होगी और मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं होगा।

3) श्रीमान गोपाल कृष्ण जी :- बर्बादियों की अब दास्ता हूँ,
है अपना जो दुश्मन मैं वो इन्सान हूँ।

मैं यह भाव प्रकट करने के लिए आया हूँ कि मुझे अपने स्वभाव का कोई ज्ञान नहीं है। जब मैं कोई गति करता हूँ बड़ों का अपमान करता हूँ तो अबोधता की अवस्था होती है। गुरू महाराज जी की शिक्षा में ही बाद में नज़र आता है। नए जन जो हमारी प्रार्थना पर आए हैं उनका धन्यवादी हूँ। श्रीमान जी के परिवार का विशेष धन्यवादी हूँ।

4) श्रीमान सरताज सिंह जी :- पढ़ाई करने के वक्त मेरी माता जी ने हमारी सेवा की थी, आज वो बीमार हैं। मेरे भाई भावजा और मेरा बेटा उनकी पीछे से सेवा कर रहे हैं। मेरी धर्म पत्नी ने मेरी मां की बहुत सेवा की है। मैं इनका आभारी हूँ। मेरे से कभी जो गलती हुई है, उसके लिए माफी चाहता हूँ। (बहुत रो रोकर, आपने अपनी धर्म पत्नी को सभा में पैरों पर सिर रखकर प्रणाम व सम्मान दिया)।

5) एक विद्यार्थी :- मैं यहां के धर्म संबंधियों का धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने बहुत अच्छी प्रेरणाएं दी हैं। बच्चों की सभा में हमें बहुत कुछ सीखने को मिला है।

6) श्रीमान जसकरण सिंह जी की बेटी :- आपने अपने पिता जी की ईमानदारी की घटना बताई और बताया कि उन्हें इसी दर से ईमानदारी मिली है।

7) श्रीमान जंगीर सिंह जी :- मासी जी (सतिन्द्र ढिल्लों) और आंटी जी को देखकर अपनी माता जी की याद आई। इन्होंने कितनी भाग भाग कर हमारी सेवा की है। इन्हें बहुत अच्छी विरासत मिली है। इनके बेटे ने भी कमाल की है। उन्होंने भगवान के महोत्सव पर सारा खर्च दिया है, मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ। सरताज जी के जो बच्चे आए है उन्होंने भी बहुत अच्छा वातावरण बनाया है। जब बेटियां भजन गा रही थीं तो मुझे गुरू महाराज की रोशनी मिल रही थी कि तुम बेटियों को बेटों के मुकाबले कम गिनते हो, देखो, तुम्हारे भगवान का काम बेटियां ही कर रही हैं। आंटी जी के एक बार के लैक्चर से ही मेरी धर्मपत्नी की मिथ्या चली गई थी और वह सेविका बन गई थी। मेरे भाई और मेरी बेटियां शादी छोड़कर महोत्सव पर आए हैं उन्होंने मेरा साथ दिया है। मैं उनका धन्यवाद करता हूँ।

8) शंभू (ड्राईवर) जी :- आपने श्रीमान जी और आंटी जी का धन्यवाद किया और कहा कि इन्होंने मुझे बहुत कुछ दिया है। मैं इनकी सेवा करने में कभी पीछे नहीं हटूंगा। (आपके आसुओं भरे बयान से कृतज्ञता का भाव झलक रहा था)

9) श्रीमती सुरजीत बराड़ जी:- मुझे अपने पिता जी से बहुत अच्छी विरासत मेहनत करने की मिली है। परन्तु जो यहां कुछ हुआ है उसमें बहुत सहायकारियों की कृपा हुई है। शम्भू बहुत मेहनती है और बहुत अच्छा लड़का है। मुझे यह अफसोस रहा है कि नई जगह और नए आदमियों की वजह से समय का कुछ गड़बड़ होता रहा है जो आगे से ध्यान रखा जाएगा। हम कम से

कम एक आदमी को समाज के साथ जरूर जोड़ें। हम शादी और प्रोग्राम छोड़कर भी समाज की सभाओं में आकर जुड़ें। हम श्रीमान जी को निराश न करके इस विज्ञानमूलक धर्म का काम करते जाएं।

10) श्रीमती अंजू शर्मा जी :- भगवान और धर्म संबंधियों का धन्यवाद जिनकी कृपा से यह वातावरण बना है। आंटी जी की प्रेरणा से मैं यहां पहुंची हूँ। आंटी जी को Iron Lady की तरह काम करते देखकर मुझे बहुत प्रेरणा मिली है। भगवान के काम को और अधिक उत्साह से करने की प्रेरणा मिली है। श्रीमान सरताज सिंह जी ने जो इस सभा में पत्नी को सम्मान दिया है यह नज़ारे इसी दर पर दिखाई दे सकते हैं। सभी धर्म संबंधियों का धन्यवाद।

11) श्रीमती रीटा जी :- आपने दूसरी श्रेणी में उन्नति के लिए समाज का धन्यवाद किया। आपने कहा कि मैं समाज की कुछ न कुछ सेवा किया करूंगी। पिता जी (ससुर साहब) ने बहुत अच्छा भजन गाया। उन्होंने मुझे हमेशा अपनी बेटी समझा है और बेटी की तरह सम्मान दिया है। यह इसी दर की कृपा है।

12) श्रीमान सुन्दर लाल जी :- श्रीमान जी की कृपा से सेवक बने थे। उन्होंने हमें बिजली चोरी करने से रोका था जिससे मुझे यह समझ आई कि अब बिजली चोरी नहीं करनी। चोरी, ठगी बंद हो गई। फिर उसके बाद बेटों ने बिजली की चोरी की तो मैंने रोका और वो भी रुक गए। भगवान के दर से हम बेईमान से ईमानदार बन गए। भगवान और श्रीमान जी की बहुत बड़ी कृपा है। यहां आकर बहुत भला होता है।

13) श्रीमान सुखदेव जी जोसन (लिखकर दिया) :- मैंने तीन दिसम्बर से छः दिसम्बर तक चण्डीगढ़ सैक्टर 24, इन्दिरा हॉलीडे भवन में सभी धर्म सम्बन्धियों के साथ भगवान देवात्मा के 175 वें जन्ममहोत्सव को मनाने का सौभाग्य प्राप्त किया। यहां भवन में प्रवेश होते ही वहां की सुन्दरता, माननीय आंटी श्रीमती सुरजीत बराड़ और माननीय मौसी जी श्रीमती सतिन्द्र जी ढिल्लों और अन्य सहयोगियों श्रीमान गोपाल कृष्ण जी, श्री शम्भू जी के आगे उनके संग्राम को देखकर हृदय झुक रहा था। बहुत खुशी महसूस हो रही थी। श्रीमान राधेश्याम जी की पहली सभा ने ही सभी यात्रियों के हृदयों को श्रद्धा विभोर कर दिया था। रात को भजनों का गान भी श्रद्धालु और सेवकों में उत्साह पैदा कर रहा था। सभी सभाऐं बहुत सुन्दर और प्रभावदायक हुईं। श्रीमान गौतम जी की सभा ने मानों फिर से गुरूमहाराज के समय की सभाओं का माहौल (वातावरण) पैदा करके सभी सेवकों और श्रद्धालुओं को पुराने जमाने की यादें ताज़ा करवा दीं।

महासभा में भी थोड़े समय में ही अनेकों घटनाओं को सुन्दर रूप से पेश करके भगवान देवात्मा के देवरूप का दर्शन सभापति माननीय आंटी जी ने करवा कर बड़े श्रीमान जी की सभाओं को याद करवा दिया था। अन्त में नए सेवकों का सेवकी में ग्रहण करना और कुछ पुराने सेवकों को दूसरी श्रेणी की प्रतिज्ञाऐं करवाकर उन्हें दूसरी श्रेणी में उन्नत किया गया। सेवकों की उन्नति का नज़ारा मैंने अपनी सेवकी के 32 सालों में पहली बार देखा है। इस जन्म महोत्सव से बहुत सारी नई प्रेरणाएं और उमंगे लेकर मैंने

अपने जीवन को और अधिक संग्रामशील और साधनशील बनाकर भगवान देवात्मा के मिशन की सेवा के लिए तैयार करना है। यदि मेरी मानसिक अवस्था मेरा साथ देने के योग्य रहेगी तो मैं कम से कम सप्ताह में एक सभा करवाकर अपना हित साधन करने के योग्य बनूंगा। पुस्तकों का अध्ययन भी और अधिक बढ़ाऊंगा। मेरी यह कामना भगवान की कृपा और सहायकारियों की सहायता से पूर्ण हो सके।

14) दूनी चन्द जी (लिखकर दिया) :- आज इतने सालों (करीब 20 सालों) से समाज से जुड़ा हुआ हूँ, बड़े श्रीमान बलदेव सिंह जी ने प्रेरणाएं दीं, सभाएं करवाई, मुझ अपाहिज - असहाय, 'शारीरिक रूप से नेत्र हीन' को भी हिम्मत हौसला दिया। अपने साथ जोड़े रखा, गुरू के दर के साथ जोड़ा, मुझ पर और हमारे परिवार पर कितना संग्राम किया, ऐसी श्रीमान जी की हमारे लिए दर्दमंद और हितकारी तस्वीर आज मुझे उनके लिखे हुए लेखों की पुस्तक 'दिल के उद्गार' का पाठ सुनते हुए सामने आई। मैं श्रीमान जी को यूँ ही समझता रहा, हालांकि मैं सदैव हर प्रोग्राम में आता रहा परन्तु आज सामने आया कि वे मुझ जैसे असहाय का भी कितना सम्मान करते थे, मेरे लिए फिक्र करते थे, कुछ विशेष धर्म सम्बन्धी उनकी प्रेरणा से मुझ जैसे को बहुत ही ज्यादा सम्मान देते हैं.... मैं पहले बहुत गुस्सेखोर था, कई प्रकार से नीच घृणा अपने अन्दर पालता रहता था, खुद भी जलता था, दूसरे जन भी उससे परेशान रहते थे, उसमें मुझे बहुत ठण्डक मिली है अन्य कई प्रकार की बुराईयां दूर हुई हैं।

अब श्रीमान जी के बहुत उपकार याद आकर उनकी कीमत महसूस होने लगी है मेरा उन्हें बहुत - बहुत प्रणाम। (जैसा कि बाबा जी ने अपने पौत्र गोपाल जी को लिखवाया)

15) डॉ० देव अनुरूप बराड़ (लिखकर भेजा) :- भगवान देवात्मा के 175वें जन्म दिवस पर, मैं आप सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ भेंट करता हूँ। आप सभी में कुछ न कुछ विशेष है और यही कारण है कि आप यहाँ उपस्थित हैं। अपने आपको और बेहतर बनाने की आपकी इच्छा और संकल्प के लिए इससे बेहतर स्थान कोई हो ही नहीं सकता, जितना कि यह महा उत्सव।

भगवान देवात्मा ने अपने जीवन में जो त्याग किए और परलोक से जो शुभाशीष वह हम पर बरसा रहे हैं, उनके सौभाग्यशाली प्राप्तकर्ता आप सभी हैं। इन पावन दिनों को संभव बनाने के लिए जो अथक परिश्रम किया गया है, वह प्रशंसा और सम्मान के योग्य है। मैं उन सभी का हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने इन चार दिनों को सफल बनाने में अपना योगदान दिया।

आप में बहुत से लोग यहाँ मेरे पिता, श्रीमान बलदेव सिंह जी से अपने संबंध के कारण उपस्थित हैं। यह उनके वर्षों के परिश्रम और समर्पण का प्रमाण है कि आपने आज महोत्सव पर पहुँचने का सौभाग्य पाया। मैं जानता हूँ कि वे इस समय आप सभी पर कितने गर्वित होंगे।

पापा तथा हमारे सभी परलोकवासी शुभचिंतक, हमें निरंतर मार्गदर्शन देते रहेंगे और हमारे जीवन को उस अंधकार से दूर ले जाने में सहायता करेंगे जो स्वार्थ, अहंकार,

क्रोध, ईर्ष्या और लोभ से उत्पन्न होते हैं। वह और हमारे सभी धर्म-संबंधी एवं शुभचिंतक, हमें उस मार्ग पर चलाते रहेंगे जो भगवान की देव ज्योति और देव तेज से प्रकाशमान है।

16) **वीरपाल जी (समराला) :-** बहुत ही श्रद्धा व सम्मान के योग्य धर्म सम्बन्धियो, सत्य देव की जय!

मुझे बेशक ज़्यादा धर्म का ज्ञान नहीं, परन्तु जब से देव समाज, देव धर्म के साथ जुड़े हुए हैं, तब से मोटे पापों से बचे हुए हैं। ऐसा लगता है कि श्रद्धेय श्रीमान बलदेव सिंह जी के चले जाने पर हम अनाथ हो गए हैं। हमें श्रीमान जी ने समय समय पर सम्भाला है। आते जाते समराला अवश्य मिलकर जाते। उनके कारण ही हम अब तक समाज से जुडे हुए हैं। मुझे आशा है कि बहन जी भी हमारा उसी प्रकार ख्याल रखेंगे। समाज के इस वातावरण में आकर अपने आप में परिवर्तन महसूस होता है, जैसे बैटरी चार्ज हो जाती है। माननीय श्रीमान बलबहादुर सिंह जी की हम पर बहुत कृपा रही है। मैं उनकी भी धन्यवादी हूं। मेरे भाभी जी मेरे साथ आने को तैयार हो गए, मैं उनकी भी शुक्रगुज़ार हूं। उन्हें भी सारा वातावरण बहुत अच्छा लगा। मेरी भानजी भी मेरे साथ सभाओं में शामिल होती रही, उसको भी लाभ हुआ है। मेरी यही कामना है कि मुझ पर गुरू महाराज व धर्म सम्बन्धियों की कृपा बनी रहे।

मैं समाज की कुछ सेवा करना चाहती हूँ। कृपा करके मुझे कोई सेवा बताई जाए। मैं अपना वायदा दान, कल्याण सत्संग में पूरा कर दूंगी।

आखिर में सब सहायकारियों, सहयोगियों और भगवान देवात्मा का धन्यवाद करते हुए, पावन देव आरती का गान करने के बाद जय ध्वनि के साथ यह पावन पर्व सम्पन्न हुआ।

(एक हाजरीन)

महोत्सव की विशेष सभा का सार

5.12.2025, 'महासभा', संक्षेप सार, विषय : परम पूजनीय भगवान देवात्मा का अद्वितीय परम लक्ष्य उसकी सिद्धि के लिए अनोखा तप और त्याग :- विकास के नियम से क्रिश्में हुए हैं, ब्रह्माण्ड में विस्फोट, गलैक्सीज़ का बनना, सूर्य, सितारे व पृथ्वी का बनना यह सब विकास के अद्भुत क्रिश्में हैं। स्तनधारी वानर जाति से विकासशील मानसिक शक्तियां लेकर मानव का आविर्भूत होना बहुत बड़ा क्रिश्मा है। आदि मानव को जिन जिन कठिनाईयों में से गुजरना पड़ा वह भी आवश्यक थी। न सिर पर छत, न खाने का पता, वर्षा, तुफान, सूर्य का ताप, सब कष्टों में से गुजरते गुजरते मनुष्य आज बाह्यक तौर पर उन्नति की शिखर छू रहा है और इसी तरह आगे भी विकास को पाता जाएगा।

नेचर में दो ही शक्तियां काम करती हैं, विकासकारी व विनाशकारी। मनुष्य की सुख अनुरागी प्रकृति ने कई प्रकार की बुराईयां भी पैदा की। बाल विवाह, विधवा विवाह, सती प्रथा आदि। यह सब प्रथाएं स्त्रियों को पुरुषों की हवस का शिकार होने के डर से भी पैदा हुई। पुरुष की हवस का परिणाम स्त्री जाति को भुगतना पड़ा है। इन बुराईयों

को दूर करने के लिए नेचर के विकास क्रम में कई सुधारक पैदा हुए, उन्हें भी बहुत विरोधताओं में से गुजरना पड़ा।

जब विकासकारी शक्तियां, विनाशकारी शक्तियों के सम्पर्क में आती है, तो संघर्ष लाजमी हो जाता है, परन्तु फतह हमेशा विकासकारी शक्तियों की होती है; देर है अन्धेर नहीं। जब विश्व के सम्बन्धों में सत्य ज्ञान की खोज में विश्वासों व धार्मिक ग्रन्थों की मिथ्या शिक्षा के बारे में विज्ञानिकों ने बात की तो उनको मार डाला गया, जेलों में बन्द कर दिया गया, तरह तरह से सताया व अपमानित किया गया। इसमें सबसे बढ़कर विरोध धार्मिक लोगों ने किया, लेकिन आख़िर फतह विज्ञान की हुई।

हिटलर, स्टालिन, मोसोलिनी जैसे तानाशाह पैदा हुए, जिन्होंने दुनिया में तबाही मचा दी थी, उनका अन्त कितना दर्दनाक हुआ, इसका इतिहास गवाह है।

मनुष्य ने दुनियावी उन्नति की, विज्ञान ने विश्व का ज्ञान खोजा, धर्मों ने मानवता को दुनियावी लालच व डर देकर अपना मतलब साधा; धर्म बढ़ते गए परन्तु दुनिया दुःखों, पापों, कुसंस्कारों में फंसती चली गई युद्ध, पारिवारिक कलह कलेश, स्वार्थ, ईर्षा, द्वेष, अहंकार ने दुनिया को नर्कमय बना दिया। भाई भाई का दुश्मन बनता चला गया, एक दूसरे के हाथों सब सम्बन्धी दुखी और परेशान थे, कोई धर्म व धर्म के साधन मनुष्य की इस अवस्था को सुधारने में सफल न हो सके।

ऐसे में एक ऐसे आविर्भाव की आवश्यकता थी, जो मनुष्य की इस सुख अनुरागी, मिथ्या अनुरागी, पापमयी प्रकृति से विरत सच्चाई और भलाई का पूर्ण प्रेमी और झूठ और बुराई का पक्का दुश्मन होने की प्रकृति के बीज लेकर आविर्भूत हुआ हो, जिन्होंने विकसित होकर उसको ऐसा आदर्श पुरुष बना दिया हो, जिसका रूप ऐसी देव ज्योति व देव तेज से सम्पन्न हो, जिससे अधिकारी मानव जगत को पापों और मिथ्याओं से मोक्ष देने ओर उन्हें उच्च जीवन विकसित करने की क्षमता हो।

यह देव प्रकृति मनुष्य प्रकृति से बिल्कुल भिन्न होने के कारण उनमें टकराव आवश्यक था।

ऐसी अद्भुत देव शक्तियां लेकर देवात्मा आविर्भूत हुए। सच कहा है :-

"आखिर वह पौष की पहली भी आ गई,
मुद्दत के तरसतों को लो भगवान मिल गए,
सीरत से देव, सूरते इन्सान मिल गए।"

मानवता की भलाई के इश्क ने उन्हें हर प्रकार का बलिदान देने के योग्य बना दिया। सरकारी नौकरी छोड़ दी, सुख सुविधाएं छोड़ दीं और अपने सब ऐशो आराम की आहुति देकर एक अद्वितीय लक्ष्य को धारण कर लिया।

"सत्य शिव सुन्दर ही मेरा, परम लक्ष्य होवे
जग के उपकार में ही जीवन यह जावे"

फिर क्या था, जिनको पापों और मिथ्याओं से निकालने के लिए सब कुछ त्यागा, उन धर्म के ठेकेदारों ने विरोध का बवंडर खड़ा कर दिया। यह आवाजें उठने लगी- हमारे देश में पहले ही बहुत भिखमंगे थे, एक और भिखमंगा पैदा हो गया है। यह

कपटी है, झूठा है, यह हमारे धर्मों को मिथ्या बताता है, इसको खत्म कर देना चाहिए, यह हमारे ग्रन्थों को ईश्वर रचित नहीं मानता आदि - आदि। केवल यही नहीं, ब्रह्मों समाज में उनके लैक्चर में हजारों जन आते थे, लेकिन मानवता को पाप और मिथ्या से निकालने का व्रत धारण किया, तो वही लोग श्रद्धा के स्थान में नीच घृणा का प्रकाश करने लगे। उनके लैक्चरों में पत्थर फैंके जाते, बैंच और लैंप तोड़े जाते। उनके प्रचारकों का सिर फोड़ा गया, उनकी किताबें छीन कर जला देते, ऐसी हरकतों से, तानाकशी से गुरू महाराज को किस प्रकार से सताया और तड़पाया गया, उनका बलिष्ट शरीर रोगों का घर बन गया। 'अलम' साहिब ने लिखा है

"दुनिया ने ऐसे लक्ष्य को लेकिन किया न पास
कब उससे मेल खाते थे, नीच सुखों के दास
आए थे आप दुनिया का, करने को गो विकास
सद हैफ! आपको मिली, दुनिया वो न शनास
दावे खिलाफ आपके दायर किए गए, इस परम पाक जात पर फायर किए गए"

यहां तक ही बस नहीं फिर मुकदमों का दौर शुरू हुआ। 11 वर्ष तक मुकदमें चले। किस प्रकार कचहरी में उन्हें कुर्सी तक न दी जाती थी, तानाकशी की जाती। एक बाहर की आंखों से भी और दिल की आंखों से भी अन्धे चन्दा सिंह वकील ने ऐलान किया कि "मैं देवात्मा के मिशन को गारत करके छोड़ूंगा, गुरू महाराज को जेल भेजने की पूरी तैयारी कर ली परन्तु नेचर की विकासकारी शक्तियों का रक्षाकारी हाथ उनके ऊपर था। अचानक किसी केस के सिलसिले में सरदार गुरुमुख सिंह जी उसी कचहरी में आ गए। वह गुरू महाराज के विरोधी थे, परन्तु जब गुरू महाराज ने उनके कन्धे पर हाथ रखकर यह शब्द कहे कि "किसी बेगुनाह को सताने की कोई हद होती है, यह जुल्म कब तक चलता रहेगा" विरोधी वकील को ऐसा करंट लगा कि उसी समय उन्होंने गुरू महाराज की जमानत दे दी और गुरू महाराज जेल में जाने से बाल बाल बच गए।

उसके बाद अब्दुल गफूर उर्फ धर्मपाल, जिसके जीवन में गुरू महाराज के प्रभावों ने आश्चर्यजनक परिवर्तन पैदा किया था, वह दुश्मनों के साथ मिल गया, क्योंकि उसके अहं पर चोट लगी जबकि पहले उसने स्वयं लिखा था :-

"मैं अन्धेरे में था, मुझे रोशनी मिली, मैं निर्दयी था, मुझे दया का भाव मिला, मैं कल्पनाओं में फंसा हुआ था, उनसे मुझे आज़ादी मिली, यदि मैं इस्लाम जैसे मज़हब से बचा वो आपकी कृपा से। ऐ दिल! अपने मोहसन (उपकारी) को पहचान। उनके एहसानों को याद कर और सरल भाव से उनका कृतज्ञ बन"

गुरू के प्रभावों में वह यह बोली बोलता था। एक बार मोगा के स्कूल में हैजा फैल गया था, नौजवान डॉक्टर हरनाम सिंह जी ने उन्हें रात दिन सेवा व दवाईयों से बचा लिया, जिसमें वे स्वयं हैजे के कारण शहीद हो गए। धर्मपाल ने उनको शुक्रगुजारी के पत्र लिखे, परन्तु इन्सानी प्रकृति बहुत भयानक है। जब उनकी अनुशासन हीनता के कारण स्कूल की नौकरी से निकाला गया, तो उनकी वही हिंसक प्रकृति जाग उठी।

धीरे - धीरे आर्य समाजी जो गुरू

महाराज के कट्टर विरोधी थे, वह उनके साथ जा मिला। स्वयं उसने लिखा कि मैंने 70,000 ट्रैक्ट देवगुरू के विरुद्ध बांटे हैं, आर्य समाजी उर्फ धर्मपाल (आर्य समाजियों ने यह नाम दिया था) मिलकर भी गुरू महाराज को परास्त नहीं कर सके। आख़िर चन्दा सिंह वकील की तरह इसे भी मुंह की खानी पड़ी।

फिर देवरत्न का दौर आया। 24 वर्ष तक गुरू महाराज ने उसकी आध्यात्मिक सेवा की, एक स्त्री के साथ नजायज सम्बन्ध के कारण कई चेतावनियों के बाद भी उसने प्रतिज्ञा तोड़ी और गुरू महाराज ने उसको आश्रम और सब पदों से निष्कासित कर दिया। वह भी आर्य समाजियों के हत्थे चढ़ गया और ऐलान कर दिया "मेरे हमलों से देवगुरू जांबर नहीं हो सकेंगे।" भूल गया कि किसी समय उसी के यह शब्द थे :-

"लाख विरोधी पैदा होवें, कुटिलपने का जोर लगावें,
ईश्वर को भी साथ मिलावें, विजयी होंगे देवगुरू जी"

गुरू महाराज को खूब सताया, भगवान देवात्मा ने उसके विषय में लिखा। देवरत्न दुनिया के सब कृतघ्नों में से एक है। गुरू महाराज पर झूठा मुकदमा किया और बुरी तरह हार गया और पंजाब छोड़कर भाग गया।

सबसे बड़ी त्रासदी यह थी कि गुरू महाराज के अपने दो बेटों को इन कृतघ्नों ने अपने साथ मिलाकर जो गुरू महाराज को सदमा पहुँचाया, उसकी कोई सीमा नहीं। गुरू महाराज ने फरमाया है कि दुनिया के और बच्चों की तरह मेरे यह बच्चे भी स्वार्थी, विश्वासघाती, कपटी, झूठे और हिंसक प्रकृति रखते थे, इसलिए आसानी से वह विरोधियों के साथ मिल जाते, फिर क्षमा के पत्र लिखते, उन्हें क्षमा भी किया जाता, परन्तु वह अपनी हरकतों से बाज नहीं आए। इसलिए भगवान ने आख़िरकार उनसे सब सम्बन्ध तोड़ लिया और फरमाया कि अब मैं शुभकामना के सिवाए उनके लिए और कुछ नहीं कर सकता।

धर्म सम्बन्धियो! हमारे सतगुरू ने किन किन कष्टों, तसीहों, अपमानों को सहकर हमें पाप और मिथ्या से बचाया है, काश! हम उनके इस उपकार को याद करते रहे सकें और उनके मिशन में कुछ कील कांटा बन सकें।

-सुरजीत बराड़

नया वर्ष

नये वर्ष की सबको बहुत बहुत मुबारक। हम सबके लिए यह वर्ष हमारी शारीरिक, मानसिक व हार्दिक विकास का हेतु हो। हमारी प्यारी और हितकारी समाज की उन्नति के लिए हम अधिक से अधिक संग्रामशील हों।

देव जीवन की परम सुन्दरता

(श्रीमान गौतम जी के पब्लिक लैक्चर का सार)

देवात्मा सत्य और शुभ के अनुरागी तथा मिथ्या और अशुभ के शत्रु हैं। नेचर में उनका आविर्भाव निराला और अद्वितीय है।

भगवान देवात्मा का जीवन जिसे देव जीवन कहते हैं, वह परम सुन्दर है क्योंकि :-

(1) देव जीवन पूर्ण कलंक रहित, पवित्र व निर्मल है

भगवान देवात्मा के जीवन में चार प्रकार के महानीच भाव जन्म जात बीज रूप में ही नहीं आए।

1) ईर्ष्या भाव 2) द्वेष भाव
3) हिंसा भाव 4) घमण्ड भाव

देवात्मा प्रत्येक नीच अनुराग और प्रत्येक नीच घृणा से पूर्णत: रहित व पवित्र हैं।

इस पृथ्वी पर भगवान देवात्मा ने अपने आखिरी संदेश में इस प्रकार फरमाया है :- "मैं सच्चे देव रूप को प्राप्त होकर हर प्रकार के नीच अनुरागों और हर प्रकार की नीच घृणाओं से ऊपर रहा हूँ.....किसी मनुष्य, पशु या किसी और जीव आदि से मेरे भीतर कोई नीच घृणा का भाव नहीं, मेरे हृदय में किसी के अशुभ के लिए कभी कोई कामना पैदा नहीं हुई, इसीलिए इन सब के संबंध में मेरा आत्मा पवित्र है और अब मैं मृत्यु के समय पूर्ण शांति के साथ इस दुनिया को छोड़ने के लिए तैयार हूँ।"

(2) देव जीवन में सर्वोच्च देव बोध और भाव हैं जो उनके जीवन की सुन्दरता, महानता और निरालेपन को दर्शाते हैं।

भगवान देवात्मा के देव बोध और देव भाव उनके जीवन की परम सुन्दरता को दर्शाते हैं। उनके कई देव बोध और भाव हम नीचे दर्ज करते हैं:-

(1) समय का बोध : श्री देव गुरु भगवान के भीतर समय की पाबंदी का भाव बहुत प्रबल रूप में विकसित हुआ है। इस भाव से परिचालित होकर वह अपने प्रति दिन के काम काज - सोने, जागने, खाना खाने, नहाने, सैर पर जाने आदि में बहुत नियमित रहते हैं और दूसरों के सम्बन्ध में भी हमेशा समय की पाबंदी रखते हैं। उन्होंने किसी के साथ मिलने का समय नियत किया हो, किसी सभा में जाना हो, रेलगाड़ी में सफर करना हो, कोई सभा करानी हो, ऐसे मौकों पर वह हमेशा समय से पहले तैयार रहते हैं और वह अपनी किसी बात में कभी भी नियत समय से अपनी तरफ से नहीं चूकते। उनके भीतर का यह भाव एक हद तक उनके कितने ही सेवकों के भीतर भी पैदा हो चुका है और इसी का यह फल है कि देव समाज के भीतर जो सभाएं होती हैं, उन में साधारणत: समय की पाबंदी का बहुत ख़्याल रखा जाता है।

खुद दूसरों के सम्बन्ध में सच्चे रहकर श्री देवगुरु भगवान यह कभी बरदाशत नहीं कर सकते कि कोई और उनके साथ समय नियत करके उसमें झूठा प्रमाणित हो। इसलिए

वह ऐसे एक - 2 मौके पर सख्त तकलीफ की हालत में से गुजरते रहे हैं। उनके जीवन की ऐसी अनेक घटनाएं हैं, एक बार देव उत्सव की एक सभा से उन्होंने तीन कर्मचारियों को समय पर न पहुंचने पर सभा से निकाल दिया था, एक डॉक्टर साहब के नियत समय पर उन के इलाज के लिए न पहुंचने पर उन्होंने बहुत बड़ी तकलीफ में होकर भी उनसे इलाज कराने से इन्कार कर दिया था, जबकि वह डॉक्टर उनका मुफ्त इलाज भी करते थे; इस सम्बन्ध में एक अन्य घटना है कि महा यज्ञ के दिनों में श्री देवगुरु भगवान अपने लाहौर निवासी कर्मचारियों और अन्य अधिकारी सेवकों को आत्मा के जीवन और मृत्यु के सम्बन्ध में कई कीमती उपदेश प्रदान करते रहते थे। एक दिन एक सेवक सभा में समय पर न पहुंचे, उससे श्री देवगुरु भगवान के हृदय पर बहुत बड़ा आघात लगा और उस सेवक के पहुंचने पर उन्होंने अपने गहरे दुख का प्रकाश किया और फरमाया, कि हम इस किस्म का कोई कारण सुनने के लिए तैयार नहीं हैं कि तुम समाज के किसी काम पर गए हुए थे। महोत्सव के बाद पूजनीय भगवान देवशास्त्र की शिक्षा के सम्बन्ध में उपदेशों का जो सिलसिला आरम्भ कर देना चाहते थे, उन सभाओं में शामिल होने के लिए उन्होंने जो शर्तें नियत कीं, उनमें से एक शर्त यह थी कि सभा में शामिल होने वाले लोग समय से पन्द्रह मिनट पहले सभा स्थान में पहुंच जाएंगे। यह घटनाएं प्रगट करती हैं कि भगवान देवात्मा के भीतर समय के सम्बन्ध में कैसे प्रबल बोध विद्यमान थे।

भगवान देवात्मा फरमाते हैं: - "मेरे निकट तीन बजे के मायने तीन ही बजे और सात बजे के मायने सात ही बजे और मंगल वा बुधवार के मायने मंगल वा बुधवार ही रहे हैं; मैंने कभी तीन को सवा तीन, साढ़े तीन वा चार के बराबर और मंगल को बुध वा कोई और दिन नहीं समझा। मेरे हजारों स्वदेशी जन जिस को 'नेटिव टाइम' कहते हैं और चार बजे के मायने सवा चार, साढे चार वा पांच आदि समझते हैं, उनकी यह गणित - विद्या कभी मेरे समझ में नहीं आई।"

(2) सफाई का बोध :- भगवान देवात्मा सफाई, तरतीब (परिपाटी) का सुंदर बोध रखते हैं। भगवान देवात्मा फरमाते हैं :- "मैं अपने वा किसी और के घर की दीवारों, खिड़कियों, छतों, मोरियों, उसके फर्श, दरवाजों, परनालों और शीशों आदि को मैला, टूटा, बदसूरत, मकड़ी के जालों से भरा हुआ व किसी रास्ते में गड्डे वा उसे धूलि से पूर्ण और गोबर वा लीद वा घास फूस आदि से मैला देखता हूं, तो मुझ पर उसका क्लेशदायक असर पड़ता है। यदि मैं अपने वा किसी और के कपड़ों, बर्तनों, लैम्पों, पुस्तकों, तस्वीरों, संदूकों, जूतों वा अपनी वा किसी और की किसी मेज चौकी आदि किसी अजीवित वस्तु को मैले और कदाकार रूप में देखता हूं, तो उससे मुझे क्लेश होता है। यदि मैं अपनी व किसी की वस्तुओं को बे ठिकाने और विश्रृंखला की हालत में देखता हूं, तो उससे भी मुझे कष्ट होता है।"

भगवान फरमाते हैं: - "हम चारपाई पर लेटे हुए भी हों, हमारी कोई चीज बेतरतीबी की अवस्था में पड़ी हुई हो, वह हमें ऐसी

हालत में दिखाई दे तो चाहे साधारणत: देखने में उसे कोई हानि न भी होती हो लेकिन जब तक हम उठकर उसे तरतीब (परिपाटी) की हालत में न रख दें तब तक हमें चैन नहीं आता। उसे टेढ़ी पड़ी हुई देखकर हम अपने आपको उसके साथ मेल की हालत में नहीं महसूस करते और उसके साथ मेल की हालत में आने के लिए बाध्य हो जाते हैं।"

श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी लिखते हैं:- सुबह दूध पीने के समय भगवान ने छोटी मेज अन्दर कमरे में मंगवाई। मैं अबोधी उसे बिना झाड़ने के ले गया। इसके रखने के साथ ही कृपा सागर ने उस पर धूल देखकर फरमाया कि मैल और धूल अन्दर लाने के लिए नहीं है बल्कि बाहर रखने और दूर करने के लिए है। मैल चाहे बाहर की हो चाहे आत्मा की उसे दूर करना चाहिए और कभी रहने न देना चाहिए।"

(3) कर्तव्य पालन का बोध : यह बोध भगवान देवात्मा में बाल्यकाल से ही विकसित हो गया था। उस समय की प्रथा के अनुसार भगवान देवात्मा के माता पिता जी ने उनका विवाह 12 वर्ष की आयु में ही कर दिया था। उस समय भगवान देवात्मा ने अपने चौबारे में कबूतर पाले हुए थे। भगवान देवात्मा उन कबूतरों की देख रेख और पालन करना अपना कर्तव्य मानते थे। उनको चिन्ता हो रही थी कि मुझे विवाह के लिए कितने ही दिनों तक घर से बाहर रहना पड़ेगा और मेरे पीछे मेरे कबूतर भूख और प्यास से कैसे बचेंगे। सोचते सोचते एक हल निकल आया। उन्होंने कबूतरों वाले कमरे में बहुत सारा अनाज और पानी भरकर रख दिया और कमरे को ताला लगा दिया। जब वापिस आकर देखा तो सारे कबूतर जीवित थे और खुशी से खेल रहे थे, जिसे देखकर भगवान बहुत खुश हुए।

(4) न्याय का बोध :- श्री देवगुरु भगवान लाहौर के जिस घर में रहते थे, उसके साथ एक और जन का मकान था, इस मकान के आगे एक बड़ा आंगन (सेहन) था। इस सेहन में एक दिन कुछ नट अपना तमाशा दिखला रहे थे। श्री देवगुरु भगवान के घर के एक कमरे की खिड़की उस सेहन की तरफ खुलती थी। भगवान ने ढोल की आवाज सुनकर अपनी खिड़की से उस सेहन की तरफ देखा तो उन्हें मालूम हुआ कि वहां पर कुछ नट अपना तमाशा दिखा रहे हैं और बहुत से लोग तमाशा देख रहे हैं। भगवान भी कुछ देर तक अपने कमरे के भीतर से उनका यह तमाशा देखते रहे। जब तमाशा खत्म हुआ, तब नटों ने अपनी रीति अनुसार सेहन के लोगों से पैसे मांगने शुरू किए। भगवान ने यद्यपि उनका यह तमाशा अपने कमरे के भीतर से चुपचाप देखा था, तो भी उनके निराले हृदय ने यह गवारा न किया कि उन्होंने जिस हुनर को इतनी देर तक देखा, वह जब उसका वाजिब मेहनताना चाहते हों, तब वह मुफ्त में उनका तमाशा देखकर उन्हें कुछ न दें। इसलिए उन्होंने उसी समय आश्रम के एक जन को बुला कर और उसके हाथ में कुछ नकदी देकर आज्ञा दी कि तुम अभी वहां जाकर उस नट को मेरी तरफ से यह दे दो। वह जन उनकी आज्ञानुसार फौरन वहां गया और नटों के सरदार को भगवान की तरफ से उनका दिया हुआ इनाम दे आया। भगवान देवात्मा ने इस

प्रकार उन नटों के प्रति अपने न्याय के बोध को दर्शाया।

(5) 'पर' का बोध :- श्री देवगुरु भगवान अनेक बार उचित होने पर भी किसी और के सुख व आराम में विघ्न न डालते थे और उसके स्थान पर आप ही कष्ट और हानि उठाते थे। भगवान देवात्मा हित अनुरागी होकर पर का महा हितकर बोध रखते थे। उन्होंने तो सारे जग के पर उपकार का जीवन व्रत ग्रहण किया था।

1. एक बार सर्दी के दिनों में श्री देवगुरु भगवान रावलपिंडी में ठहरे थे। वहां पर एक दिन वह कुछ जनों से साथ रखटोपी की तरफ सैर करने के लिए गए। गाड़ी से उतरकर वह बहुत देर तक धूप में फिरते रहे, और सूर्य के ताप से पसीना-पसीना हो गए। इसी पसीने की हालत में वह जब गाड़ी में बैठकर घर को वापिस हुए, तब जिस तरफ वह बैठे हुए थे, उस तरफ उन पर बहुत ठण्डी हवा आने लगी। यह हवा उनके कमजोर गले के लिए बहुत हानिकारक थी। भगवान् के पास अपने गले में लपेटने के लिए उस समय कोई रुमाल या और कपड़ा भी न था। सामने की सीट पर दो लड़कियाँ बैठी हुई थीं। भगवान् यदि चाहते, तो वह इन लड़कियों को अपनी तरफ की सीट पर बिठाकर खुद उनकी जगह बैठकर इस हानि से बच सकते थे, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने अपने ऊपर ही कुल हानि सहना पसन्द किया परन्तु उन लड़कियों को कुछ न कहा, इसका फल यह हुआ कि उनके गरम सिर और गले पर लगातार ठण्डी हवा के लगने से थोड़ी देर बाद उन पर बहुत सख्त दर्जे के जुकाम का आक्रमण हुआ। यह जुकाम कई हफ्ते तक जारी रहा। गले के भीतर वरम के हो जाने से उसके कारण भी बहुत तकलीफ रही। यह सब प्रकार का बहुत बड़ा दुःख और कष्ट उन्होंने अपने ऊपर लेना स्वीकार किया, परन्तु उन दोनों लड़कियों से किसी को भी अपनी जगह पर बिठाकर उन्हें किसी तकलीफ में डालना उन्होंने पसन्द न किया।

2. एक दिन दोपहर के बाद सत्यदेव भगवान् देवात्मा पर्वताश्रम सोलन के खुले और बड़े आंगन में घूम रहे थे, यह आंगन पर्वताश्रम के चारों ओर है। जब पूजनीय भगवान् ने पहला ही चक्कर लगाया तब उन्हें मालूम हुआ कि उनके एक सेवक एक तरफ के बरामदे में कुछ देर के लिए आराम कर रहे हैं, जो वह दोपहर के बाद किया करते थे। पूजनीय भगवान् ने इस ख़याल से कि उस सेहन के उस हिस्से में से गुजरने पर कहीं उस सेवक के आराम में विघ्न उत्पन्न न हो उस तरफ से जाना ही बन्द कर दिया और वह दूसरी तरफ चक्कर लगाने लग गए। इस दृश्य को सामने लाकर हृदय जीवन-दाता भगवान् देवात्मा के पवित्र श्री चरणों में झुक जाता है कि जहां साधारण मनुष्य परले दर्जे के स्वार्थ परायण होकर दूसरे अस्तित्वों (बहुत-सी सूरतों में अपने से बहुत बढ़िया अस्तित्वों) को ध्यान में ही नहीं लाते और अपने नीच अनुरागों की तृप्ति के लिए दूसरों के उचित अधिकारों को अन्धाधुन्ध पांव तले रौंदते देखे जाते हैं, वहां हित स्वरूप भगवान् देवात्मा को छोटी-छोटी बातों में भी दूसरों का कितना ख़्याल!

(चलता)

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

देव समाज के पाठ और विचार के साधनों की तालिका (वर्ष 2026 ई०)

1	माता पिता सन्तान के सम्बन्ध में	06 जनवरी 2026 (गणेश चतुर्थी)
2	भाई बहनों के सम्बन्ध में	23 जनवरी 2026 (बसंत पंचमी)
3	देव समाज के सम्बन्ध में (देव समाज उत्सव)	11, 12, 13 फरवरी 2026
4	पति पत्नी के सम्बन्ध में	04 मार्च 2024 (होली)
5	उद्भिद (वनस्पति) जगत् के सम्बन्ध में	20 मार्च 2026 (हिन्दू नव वर्ष)
6	भृत्य स्वामी (नौकर मालिक) के सम्बन्ध में	3 अप्रैल 2026
7	स्वंशीय जनों के सम्बन्ध में	30 अप्रैल 2026
8	स्वदेश के सम्बन्ध में	25 जून 2026 (निर्जला एकादशी)
9	साथी सेवकों के सम्बन्ध में (सेवक उत्सव)	28, 29, 30 जुलाई 2026
10	स्वास्तित्व के संबंध में (सत्य धर्म बोध उत्सव)	27, 28, 29 अगस्त 2026 (रक्षा बंधन)
11	पशु जगत् के सम्बन्ध में	19 सितम्बर 2026 (राधा अष्टमी)
12	परलोक के सम्बन्ध में	10 अक्तूबर 2026 (अंतिम श्राद्ध)
13	स्वजाति के सम्बन्ध में	21 अक्तूबर 2026 (दशहरा)
14	भौतिक जगत् के सम्बन्ध में	8 नवम्बर 2026 (दीपावली)
15	मनुष्य मात्र के सम्बन्ध में	23 नवम्बर 2026 (गंगा स्नान)
16	भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में (महोत्सव)	22, 23, 24, 25 दिसम्बर 2026

नोट :- 1) भगवान देवात्मा की आज्ञा अनुसार पाठ और विचार के साधनों के जो विशेष दिन किसी हिन्दु त्यौहार के दिन हों, वो जहां तक सम्भव हो उसी दिन मनाए जाएं।
2) भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में आरंभिक दिन 24 नवम्बर, 2026 दिन मंगलवार को है।
3) महोत्सव का दिन 24 दिसम्बर, 2026 दिन गुरूवार को है।
4) देव समाज उत्सव का विशेष दिन 12 फरवरी, सेवक उत्सव का विशेष दिन 29 जुलाई, और सत्यधर्म बोध उत्सव का विशेष दिन 28 अगस्त, 2026 को है।

मिसिज़ सुरजीत बराड़ (लाईफ़ वर्कर) - Dev Samaj Global, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक
"धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*
म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts